प्राचीन भारत में पर्यावरण : वैदिक काल के संदर्भ में

चन्द्रोदय सिंह

वैदिक ऋषियों की दृष्टि में भौगोलिक दृष्टि से जिस भूमि पर अनेक देश, उसके नागरिक अवस्थित हैं, जिसपर विभिन्न, नदियाँ, पर्वत, जंगल और प्राकृतिक सत्ताएँ अवस्थित है; जिसपर विभिन्न पशु पक्षी विचरण करते हैं एवं कीट–पतंग क्रियाशील है; ये सभी मिलकर एक परिवार हैं, यही विश्व परिवार हैं, यही विश्व परिवार है, जिसको एक भाव से देखना अपनी भावपूर्ण दृष्टि का वैश्वकीकरण है। इसीलिए 'अथर्ववेद' के 'भूमिसूक्त' में पृथ्वी को माता कहा गया है और उसकी उर्वराशक्ति, सहनशीलता, पालनशीलता आदि का वर्णन करते हुए उससे अपने दीर्घायु होने की कामना की गयी है। उससे प्रार्थना की गयी है कि 'जिस मातृभूमि में सागर महासागर, नदी, नहर, झीले, तालाब, कुएँ आदि जल के साधन हों, जहाँ सब भाँति के अन्न, फल शाक आदि अधिक मात्रा में पैदा होते हों, जिससे सभी प्राणी सुखी हैं इस प्रकार की हमारी पृथ्वी हमें श्रेष्ठ भोज्यपदार्थ एवं ऐश्वर्य प्रदान करने वाली हो। यज्ञ कर्म करने वालो के लिए नदियाँ, वायु मधुर, प्रवाह पैदा करे सभी औषधियाँ मधुरता से सम्पन्न हों। सभी वनस्पतियाँ हमारे लिए मधुरता प्रदार करें एवं सूर्यदेव अपने माधुर्य से पुष्ट करें। पिता की तरह पोषणकर्त्ता दिव्य लोक हमारे लिए माधुर्ययुक्त हो। मातृवत् रक्षक पृथ्वी की रज भी मधु के समान आन्नदप्रद हो। इसीलिए वैदिक परम्परा में प्रकृति को वायुप्रदूषण, जलप्रदूषण, ध्वनिप्रदूषण, खाद्यप्रदूषण तथा पृथ्वी एवं वनस्पतियों से सम्बन्धित प्रदूषण से मुक्त रखने तथा जलरक्षण से सम्बन्धी अनेकशः उद्धरण प्राप्त होते हैं।